Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदप्रकाश के २५ वर्ष पूरे हुए

नये वर्ष में उत्साह के साथ प्रवेश

वर्ष के १२ अङ्कों में से ८ अङ्क विशेषांक

१.	अक्ष सूक्त अंक	स्वामी जगदीश्वरानन्द
२.	प्रश्नोपनिषद सार	,,
३.	भारतीय संस्कृति अंक	,,
४.	देवियों को संदेश	,,
५.	भगवदभक्ति अंक	पं. जयदत्त शास्त्री एम. ए.
६.	मांस मदिरा निषेध अंक	स्व. श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
७.	शंका समाधान	स्व. श्री पं. रामचन्द्र देहलवी
८.	वेद व्यावहारिक हैं	,, ,,

वार्षिक मूल्य ५.०० में उपर्युक्त सभी विशेषांकों का मूल्य सम्मिलित है। पुस्तक रूप में अंक एक-एक रुपये के होंगे।

गत वर्ष की भांति जो समाजें वा सज्जन ५ या अधिक ग्राहक बनाकर भेजेंगी उनके नाम वेदप्रकाश के आगामी अंकों में छापे जायेंगे। तथा उन्हें ५ ग्राहकों का वार्षिक शुल्क २५-०० के स्थान पर केवल २०-०० भेजने होंगे।

९ वां बृहद् विशेषांक षड्-दर्शन अंक होगा। इस अंक का मूल्य प्रकाशन के बाद २५-०० होगा पर जो पाठक प्रकाशन से पूर्व का मूल्य २०-०० भेज देंगे उन्हें डाकखर्च भी नहीं देना होगा।

—व्यवस्थापक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थ प्रकाश

कई महत्वपूर्ण परिशिष्टों से युक्त एक संग्रहणीय संस्करण

आठ परिशिष्ट

१. प्रथम समुल्लास में आये ईश्वर के १०८ नामों की अकारादिक्रम से सूची।

२. सत्यार्थ प्रकाश में व्याख्यात पारिभाषिक शब्दों की अकारादिक्रम से सूची।

३. सत्यार्थ प्रकाश में निर्दिष्ट व्यक्तियों स्थानादि की अकारादिक्रम सूची।

४. सत्यार्थप्रकाश १३ वें समुल्लास में भाषा में निर्दिष्ट विभिन्न शब्दों का रोमन लिपि में निर्देश। (जैसे हारून का Aaron)

५. चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों के अनुवाद के सम्बंध में पं० रामचंद्र देहलवी का वक्तव्य। ६. सत्यार्थ प्रकाश की आधार ग्रंथ सूची।

७. सत्यार्थ प्रकाश पर उठी शंकाओं का समाधान चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव विद्यालंकार द्वारा।

८. अंत में अकारादिक्रम से प्रमाण सूची।

विशेषतायें

१. यह शताब्दी संस्करण पं० भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर द्वारा महर्षि की मूल प्रति से सम्पादित है। सत्यार्थप्रकाश के इतिहास पर पं० भगवद्दत जी की एक विवेचनापूर्ण भूमिका इस शताब्दी संस्करण में दी गई है।

२. प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर उस पृष्ठ में आ रहे विषय का उल्लेख।

३. अनुच्छेदों (पैराग्राफ) पर क्रम-संख्या।

४. आरम्भ में एक विस्तृत विषय सूची समुल्लास-अनुसार।

बढ़िया कागज। १६ प्वां० का मोटा मोनो टाइप में छपा। सुन्दर नयनाभिराम छपाई। मशीन द्वारा मजबूत जुजबंदी की सिलाई। सम्पूर्ण कपड़े की जिल्द। स्वर्णाक्षरों में पुस्तक का नाम। मूल्य २५-००

वैदिक सम्पदा [पं० वीरसेन वेदश्रमी]

'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है' तथा 'वेद में आधुनिक सभी समस्याओं का समाधान है' की व्याख्या में लिखा गया यह विषद्-ग्रन्थ वेद के सभी विद्वानों द्वारा सराहा गया है।

पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड लिखते हैं—वैदिक समाजशस्त्र, वैदिक समाजवाद में पारिवारिक आदर्श, गृहस्थ निर्माण, आदर्शवाद, सामाजिक समस्याएं, वेद में यातायात, वेद में चिकित्सा विज्ञान, वैदिक अर्थशास्त्र, वैदिक गणित, विज्ञान, रेखागणित, शासन [राजनीति], शिक्षा विज्ञान, वेदों में भाषा विज्ञान, ऋतुविज्ञान, भूतत्वविज्ञान, पदार्थ विज्ञान, अग्निविज्ञान, विमान विज्ञान, जलविज्ञान, वृष्टिविज्ञान, धर्म इस प्रकार विभाजन करते हुए वेदों के आधार पर इन पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। मूल्य २०-००; राज संस्करण ३०-००

गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रकाश

संस्थापक : स्व० श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष : २५ अंक १२] वार्षिक मूल्य : पांच रुपया [जुलाई १९७६

सम्पादक : विजयकुमार आ० सम्पादक : स्वा. जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

वेदप्रकाश के आगामी लघु और बृहद् विशेषाङ्क

'वेदप्रकाश' के विशेषाङ्कों की एक अनुपम परम्परा रही है। वेदप्रकाश ने अपने पाठकों को जो अनुपम विशेषाङ्क प्रदान किये हैं उनकी सर्वत्र प्रशंसा हुई है। पाठकों और विद्वानों—सभी ने उन्हें सराहा है। दयानन्द ग्रन्थ संग्रह, वाल्मीकि रामायण, वैदिक धर्म, वैदिक उदात्त भावनाएँ, वैदिक प्रश्नोत्तरी, ईशोपनिषद्, वैदिक सम्पदा, देहलवी ग्रन्थावली, व्याख्यान माला, गुरुदत्त लेखावली, बृहदारण्यक कथा माला—आदि अङ्कों को कौन भुला सकता है ?

इस अंक के साथ 'वेदप्रकाश' अपने जीवन के २५ वर्ष पूर्ण कर रहा है। आगामी वर्ष के लिए वेदप्रकाश के बृहद् एवं लघु विशेषाङ्कों की योजना इस प्रकार है—

दर्शन-विशेषांक—यह अङ्क वेदप्रकाश साइज के लगभग ६०० पृष्ठ का होगा। इसमें न्याय,वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और वेदान्त इन छह दर्शनों का संक्षिप्त अनुवाद होगा। आरम्भ में एक विस्तृत भूमिका और अन्त में सभी दर्शनों की सूत्र सूची। सभी दर्शन अभी तक एक जिल्द में सानुवाद कहीं नहीं छपे हैं। वेदप्रकाश की परम्परा के अनुसार इसकी छपाई आदि शुद्ध एवं सुन्दर होगी। यात्रा में सभी दर्शनों के साथ ले जाने में बहुत सुविधा होगी। लिखाई का कार्य आरम्भ हो गया है। एक दर्शन समाप्त हो गया है। दूसरा प्रारम्भ हो गया है। यह ग्रन्थ **जनवरी मास** सन् ७७ में वेदप्रकाश के पाठकों को उपलब्ध होगा। इस ग्रन्थ का मूल्य होगा २५ रुपये, परन्तु वेद प्रकाश के पाठकों को केवल २०-०० रु० में घर बैठे उपलब्ध हो जाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस वृहद् विशेषाङ्क के अतिरिक्त इस वर्ष ८ लघु विशेषाङ्क देने की भी योजना है। इन अङ्कों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है—

अक्षसूक्त-अङ्क—ऋग्वेद दशम मण्डल में एक सूक्त है जिसका नाम है—अक्षसूक्त। इस सूक्त में जुआ की निन्दा और जुआरी की दुर्दशा का दर्दनाक चित्रण है। मैं तीन वर्ष पूर्व आर्यसमाज श्रृंगार नगर लखनऊ में वेद-सप्ताह के अवसर पर गया हुआ था। एक दिन एक डाक्टर महोदय के यहाँ बैठा हुआ था। बात चीत करते हुए डाक्टर महोदय ने कहा—"पाश्चात्य लोगों की ऐसी धारणा है कि जिस समय भारत में जुए का प्रचलन बढ़ने लगा तब उसके दोष दिखाने के लिए यह सूक्त बनाकर वेद में मिला दिया गया। आपका इस सम्बन्ध में क्या कहना है?" मैंने कहा—"पाश्चात्यों की यह विचारधारा सर्वथा निर्मूल है। वेद में आत्मा और निषेधात्मक दो प्रकार के उपदेश है। अक्षसूक्त निषेधात्मक उपदेश का नमूना है। एक पिता अपने पुत्र को उपदेश देता है—"बेटा! चोरी मत करना, जुआ मत खेलना, असत्य मत बोलना।" तो क्या ऐसा माना जाए कि जब पुत्र ने चोरी आदि करना प्रारम्भ कर दिया था तब पिता ने उसे ऐसा उपदेश दिया। नहीं। यह निषेधात्मक उपदेश है। डाक्टर महोदय बोले—"बात तो आपकी ठीक है परन्तु क्या इसका कोई आध्यात्मिक अर्थ नहीं हो सकता? मैंने कहा, "सोचूंगा।" बात आई-गई हुई। मस्तिष्क में एक विचार पड़ा रह गया। एक दिन सूरिनाम, (द. अमेरिका) में पं० रामाधार जी को संस्कृत पढ़ा रहा था। पढ़ाते-पढ़ाते सूक्त के एक मन्त्र का अर्थ बिजली की भाँति मस्तिष्क में कौंध गया। अब सारे सूक्त की आध्यात्मिक व्याख्या लगा ली गई है। अतः श्रावणी के पावन पर्व पर अक्ष सूक्त की आध्यात्मिक और आधिभौतिक दोनों व्याख्याएँ इस **'अक्ष सूक्त अङ्क'** में पाठकों को पढ़ने के लिए मिलेंगी।

प्रश्नोपनिषद् सार—उपनिषद् अध्यात्म विद्या के अगाध भण्डार हैं। भारतीय और पाश्चात्य जिसने भी उन्हें पढ़ा वहीं इन पर मुग्ध हो गया। उपनिषदों में गूढ़ तत्त्व छिपे हुए हैं। कहीं-कहीं गहन और गम्भीर ग्रन्थियाँ हैं। इस विशेषाङ्क में प्रश्नोपनिषद् का सार प्रस्तुत किया गया है। पाठक अनुभव करेंगे कि इस उपनिषद् को अत्यन्त सरल बना दिया गया है। ग्रन्थ लिखकर तैयार है। अक्टूबर मास में पाठकों की सेवा में भेंट करेंगे।

भारतीय संस्कृति अङ्क—संसार में भारतीय संस्कृति सर्वप्राचीन एवं बे-जोड़ है। यजुर्वेद में कहा है—'सा संस्कृतिर्विश्ववारा।" भारतीय अथवा वैदिक संस्कृति क्या है। इसके मूल में कौन-कौन से तत्त्व हैं। इन तत्त्वों की क्या विशेषता है, ये हमारे जीवन के लिए क्या संदेश एवं उपदेश देते हैं इन तत्त्वों में क्या विलक्षणता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है कि यह संस्कृति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है आदि बातों का विश्लेषण इस अङ्क में पाठक पढ़ पाएंगे।

देवियों को संदेश—माता निर्माता भवति। माता निर्माता होती है। माता की महिमा महान् है। परन्तु आज माता अपनी महिमा और गौरव को भूल चुकी है। माता का कर्त्तव्य क्या है। माता को—नारी को अपने जीवन में किन गुणों का विकास करना चाहिए, उसकी चाल-ढाल कैसी होनी चाहिए इन्हीं सब बातों का विवेचन इस ग्रन्थ में रहेगा।

ये पाँचों ग्रन्थों मेरे द्वारा लिखे जा रहे हैं। मुझे अपने सम्बन्ध में पाठकों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि मैं कैसा लिखता हूं।

मांस-मदिरा निषेधाङ्क—मांस और मदिरा मनुष्य का भोजन और पेय नहीं है। मांस हिंसा के बिना प्राप्त नहीं होता जो पाप है। मदिरा बुद्धि को समाप्त कर मनुष्य को पशु बना देती है। सभी मतों और पन्थों ने सभी महापुरुषों और सन्तों ने इनकी निन्दा की है। ये अभक्ष्य हैं। ये मनुष्यों के लिए सर्वथा अनुपयोगी है। इस विशेषाङ्क में यह दिखाया गया है कि वेदादिशास्त्रों में तथा आधुनिकतम सभी मत-मतान्तरों में मांस-मदिरा का खण्डन किया गया है। यह लघु अंक आर्य जगत् के मूर्द्धन्य नेता स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द की अमर कृति है।

भगवद्भक्ति अङ्क—परमात्मा की उपासना करनी चाहिए परन्तु कैसे? परमात्मा क्या है और उसकी उपासना की, भक्ति की विधि क्या है। वेदादिशास्त्रों और अन्य अनेक ग्रन्थों से भगवद् भक्ति सम्बन्धी उद्धरण देकर विषय का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। इस अंक के लेखक है श्री पं० जयदत्त जी शास्त्री एम.ए.।

इनके अतिरिक्त दो विशेषाङ्क पं० रामचन्द्र जी देहलवी के टेपरिकार्डों के आधार पर तैयार करके प्रस्तुत किये जाएंगे।

सभी पाठकों से नम्र निवेदन है कि स्वयं अपना शुल्क भेजें और अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाएँ। स्मरण रखें—बृहद् विशेषाङ्क का मूल्य प्रकाशन से पूर्व २०-०० रुपये। वेदप्रकाश के २६ वर्ष में १२ अंकों में से लगभग ८ अंक विशेषांक होंगे। वेदप्रकाश का वार्षिक मूल्य इस अंक से ५-०० किया जा रहा है। पर जो ग्राहक ५ ग्राहकों का मूल्य एक साथ भेजेंगे उसे कुल २०-०० भेजने होंगे।

वाल्मीकि रामायण

वाल्मीकि रामायण का प्रथम संस्करण समाप्त हो गया परन्तु इसकी मांग निरन्तर बनी हुई है। प्रतिदिन पत्र आते रहते हैं। अतः इसका दूसरा संस्करण छापने का निर्णय किया गया है। इस बार जो टाइप आदि की अशुद्धियाँ रह गई थी उन सभी को ठीक कर दिया गया है। आरम्भ में शंका समाधान के रूप में कुछ मैटर और बढ़ा दिया है। इस प्रकार पहले की अपेक्षा यह और भी उपयोगी बन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया है। हर वस्तु का भाव बढ़ रहा है। कागज और छपाई आदि सभी मंहगे हैं अतः इस संस्करण का मूल्य ३५ रु० होगा। परन्तु जो व्यक्ति ३१ जुलाई तक २५ मनी आर्डर से भेज देंगे उन्हें पुस्तक रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेज दी जायेगी। जो सज्जन मंगाना चाहें शीघ्रता करें।

मेरी प्रचार यात्रा

आर्य समाज सोलन—८ जून से १३ जून तक आर्यसमाज सोलन (हि० प्र०) का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। १२-१३ को उत्सव था, उत्सव से पूर्व वेद प्रवचनों का आयोजन किया गया था। यहाँ उपस्थिति कम रही परन्तु श्रोताओं में श्रद्धा बहुत थी। बारिश में भी श्रोतागण दूर-दूर से आते रहे। ८ से ११ जून तक तो मेरा तथा पं० बलराज जी भजनोपदेशक का कार्यक्रम था। शनि और रविवार में पं० रामानन्द जी एम. ए. तथा स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी भी पधार गये थे। रविवार की प्रातः काल स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी का व्याख्या अतीव ओजस्वी एवं अपूर्व रहा। उत्सव में ही एक कार्यक्रम, आर्यसमाज मन्दिर में एक बच्चे का मुण्डन-संस्कार था। पुरोहित थे पं० रामानन्द जी और ब्रह्मा के आसन पर मुझे बैठाया गया। संस्कार के पश्चात् मैंने संस्कारों की महत्ता पर व्याख्यान दिया जो सभी श्रोताओं को बहुत पसंद आया।

शनि-रवि—दोनों दिन सभी आगन्तुक महानुभावों के भोजन का प्रबन्ध ऋषि लंगर में किया गया।

आर्यसमाज हिसार—जिस समय मैं सूरिनाम से लौटा तभी से श्री बलराज गोयल की इच्छा थी कि मैं एक सप्ताह के लिए हिसार आऊँ और उनके घर पर निवास करूँ। मैंने जून मास के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी। तदनुसार १४ से २० जून तक आर्यसमाज नागारी गेट में प्रवचनों का कार्यक्रम रखा गया। भोजन अन्य परिवारों में भी होता रहा परन्तु निवास श्री बलराज जी के गृह पर ही रहा। सात दिन तक वेद प्रवचनों की गंगा बही जिस में जिज्ञासु जनों ने खूब स्नान किया। रात्रि के अतिरिक्त दिन में भी तीन परिवारों में मेरे कार्यक्रम हुए। एक दिन श्री बलराज जी के गृह पर, एक दिन बड़ा बाजार, कलकत्ता आर्यसमाज के प्रधान फूलचन्द्र जी के गृह पर तथा एक दिन सुमेशचन्द्र जी सिंगल के गृह पर। सभी व्याख्यानों को श्री बलराज जी ने टेप किया। व्याख्यानों के अतिरिक्त उन्होंने सन्ध्या और यज्ञ के मन्त्रों को भी टेप किया।

श्री बलराज जी २८ वर्षीय एक उत्साही युवक हैं। निष्ठावान् आर्य पिता डा० बनवारीलाल जी के सुयोग्य पुत्र हैं। स्वाध्यायशील हैं। घर में अपना पुस्तकालय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। जिसमें वेद, दर्शन उपनिषद् रामायण, महाभारत और महर्षिकृत सभी ग्रन्थ हैं। घर पर दैनिक यज्ञ होता है। आपकी माता जी अत्यन्त श्रद्धालु महिला हैं। माता जी की श्रद्धा ही आप में समाई हुई है। आपकी पत्नी निर्मला जी भी सचमुच आदर्श गृहिणी हैं। इस परिवार में सात दिन के निवास की मधुर स्मृतियाँ सदा बनी रहेंगी। मेरे निवास काल में एक ओर, श्री बलराज जी ने सन्ध्या-यज्ञ के मन्त्रों का शुद्ध-उच्चारण करना सीखा तो दूसरी ओर योग-आसन भी सीखे। चलते-चलते मेरी झोली में वस्त्रों के अतिरिक्त एक बहुत बड़ी राशि भी डाल दी। मङ्गलमय प्रभु से प्रार्थना है कि यह परिवार फले-फूले और वैदिक धर्म की सेवा करता रहे।

व्याख्यानों का यह क्रम आर्यसमाज के अधिकारियों तथा श्रोताओं का इतना पसन्द आया कि उन्होंने प्रतिवर्ष एक सप्ताह आर्यसमाज हिसार को प्रदान करने की प्रार्थना की।

शाबाश डा० चिरंजीलाल—१८ से २० जून तक आर्यसमाज फतेहाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। हिसार से एक दिन के लिए मुझे और आर्यमुनि जी वानप्रस्थ (जो इस हिसार यात्रा में मेरे साथ थे) को भी १८ जून के लिए फतेहाबाद आमन्त्रित किया गया। प्रातः काल मेरा वेदप्रवचन हुआ। सभी श्रोता मुग्ध हो गये। स्टेज से भी बहुत सुन्दर की ध्वनि गूंज उठी।

भोजन का प्रबन्ध डा० चिरंजीलाल जी के निवास पर था। डा० महोदय 'दिल्ला वाला हस्पताल' के सञ्चालक हैं। भोजन सामने आया तो हलवा, पूरियाँ तथा सभी सब्जियों पर घी तैर रहा था। सामने रथ के डब्बे खुले हुए थे। मैं रूखी रोटियों खा सकता हूँ, वनस्पति घी नहीं। जहाँ कहीं अनजान में वनस्पति खाया और मेरा गला बैठा। मैंने आखिर पूछ ही लिया कि क्या वनस्पति घी का प्रयोग हुआ है। डा० महोदय ने कहा किसी भी वस्तु में वनस्पति घी का प्रयोग नहीं है, सभी शुद्ध घी से तैयार किया गया है। दोसौ-ढाईसौ व्यक्तियों का भोजन और शुद्ध घी में—यह है आर्यों की श्रद्धा। जो लोग कहते हैं आर्यों में श्रद्धा नहीं है तनिक निकलें ग्रामों की ओर। विवाहों में भी लोग जहाँ अपने घरवाले और सगे सम्बन्धी होते हैं, वनस्पति का प्रयोग करते हैं परन्तु डाक्टर महोदय आर्यबन्धुओं को शुद्ध घी का खाना खिला रहे हैं और वह भी दो-चार को नहीं, सैकड़ों को—शाबाश डाक्टर महोदय। डा० और डाक्टरनी तथा सभी बच्चे भी सेवा में लगे हुए थे। प्रभु से प्रार्थना है कि डाक्टर परिवार की ये सेवा भावना और श्रद्धा निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदोपदेश—सत्संग में सुनाइए

दिव्य-धन

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् ।
विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे ॥

—ऋ० ५।५०।१

शब्दार्थ—(विश्वः मर्तः) सब मनुष्य, मनुष्य मात्र (राये) भौतिक धनसम्पदा के लिए (इषुध्यति) तीर चला रहा है, प्रयत्न, पुरुषार्थ और याचना कर रहा है। [इषुध्यति, इति यञ्चाकर्मा, नि० ३। १९] मनुष्य को चाहिए कि वह (पुष्यसे) आत्म पुष्टि के लिए (द्युम्नम्) आध्यात्मिक ऐश्वर्य, दिव्यधन का (वृणीत) वरण करें (विश्वः) प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह (नेतुः देवस्य) विश्वनायक परमात्म देव की (सख्यम् वुरीत) मित्रता का वरण करें।

व्याख्या

विश्वो राये इषुध्यति—आज जिस मनुष्य को देखिए धन के लिए तीर ताने हुए सन्नद्ध है। जैसे शिकारी शिकार के लिए तीर ताने हुए इधर-से-उधर चक्कर लगाता है और प्राणियों का वध करता है ऐसे ही मनुष्य भी पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, चोरी और जारी, हिंसा और अहिंसा का विचार न करके धन कमाने के लिए कटिबद्ध है। धन कमाने के लिए मनुष्य नीच-से-नीच और ओछे-से-ओछे हथियारों का प्रयोग करने में संकोच नहीं करता। धन प्राप्ति के लिए मनुष्य कितना नीच कर्म तक कर सकता है, इस सम्बन्ध में एक सत्य घटना प्रस्तुत है—

एक युवक, जिसके पास दस सहस्र रुपये थे, सायंकाल एक स्टेशन पर उतरा। वह स्टेशन मास्टर से मिला और कहा कि मुझे अमुक गांव जाना है। मेरे पास एक बड़ी राशि है अब इस समय मैं गांव जाना नहीं चाहता। आप यहां कोई प्रबन्ध कर दीजिए। स्टेशन मास्टर ने उसे अपने घर भेज दिया। बाहर एक खाट डलवा दी। रात्रि में स्टेशन मास्टर का मन मचल गया। सोचा इसे मार कर रुपये प्राप्त कर लूं। एक कुली को अपने साथ मिलाया। घर पहुंचा और गंडासे का एक भरपूर हाथ मारकर एक ही बार में युवक का काम तमाम कर दिया। प्रातः वह युवक स्टेशन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर स्टेशन मास्टर को धन्यवाद देने पहुंचा तो उसे जीवित देखकर स्टेशन मास्टर के पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। वस्तुतः हुआ यह कि जब रात्रि में स्टेशन मास्टर का लड़का घर आया और इस युवक से बात चीत की तब इसकी योग्यता से प्रभावित होकर उसने अतिथि को तो अन्दर सुला दिया और स्वयं बाहर सो गया स्टेशन मास्टर ने धन के लोभ में अपने ही पुत्र को समाप्त कर दिया।

आज येन-केन प्रकारेण मनुष्य धनोपर्जन में लगा हुआ है। एक किसान प्रातः काल उठते ही हल और बैल अथवा ट्रैक्टर लेकर खेत पर चला जाता है। एक व्यापारी रात और दिन कमाने की चिन्ता में है। एक कर्ल्क प्रातः से सायं तक फाइलों के चक्कर में है। एक अध्यापक टयूशन आदि के द्वारा हर समय धन बटोरने में लगा है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ९९ के चक्कर में पड़ा हुआ है। अरे! हमारे जीवन का उद्देश्य यह तो नहीं था! **आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।**

भौतिक ऐश्वर्य हेय नहीं है। वह भी आवश्यक है। धन के बिना मनुष्य को संसार में कोई पूछता नहीं है। धन कमाओ। वेद धन कमाने के लिए मना नहीं करता। वैदिक धर्मी तो प्रति दिन यज्ञ करते हुए प्रार्थना करता है—**'वयं स्याम पयतो रयीणाम्** हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें।

धन कमाओ और खूब कमाओ परन्तु स्मरण रखो—**"धनानि भूमौ।"** यह धन भूमि में गढ़ा रह जाएगा। यह धन और सम्पत्ति कभी किसी के साथ नहीं गई सिकन्दर ने कितनी लूटमार की परन्तु अन्त में जब संसार से जाने लगा तो उसके दोनों हाथ कफन से बाहर निकले हुए थे, दोनों हाथ रिक्त=खाली थे। वह संसार के मनुष्यों को शिक्षा देता हुआ विदा हुआ।

भौतिक धन के साथ आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्राप्त करो। आत्मा को भोजन दो। आत्मा के साथ तो आत्मिक सम्पदाएँ हो जाती हैं। महर्षि मनु ने कहा है—

नामुत्र सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः।
न पुत्र दारा न ज्ञातिर्धमस्तिष्ठति केवलः॥—मनु० ४। २३९

परलोक में माता-पिता, पुत्र, पत्नी और बन्धु-बान्धव कोई साथ नहीं देता वहाँ तो केवल धर्म ही साथी होता है।

भौतिक धन से शारीरिक सुख मिल सकता है। आत्मिक-कल्याण तो अध्यात्मिक धन से ही मिलेगा अतः वेद सन्देश देता है।—

द्युम्नं वृणीत पुष्यसे

आत्मिक पुष्टि के लिए आध्यात्मिक ऐश्वर्य का दिव्य धन का वरण करो। आत्म सम्पदा क्या है? आत्म सम्पदा का अर्थ है—आदीनता, आत्मविश्वास, दृढ़-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संकल्प स्वाभिमान, संयम सदाचार, ब्रह्मचर्य, तप उत्साह, यश, विनम्रता आदि। यहाँ सभी की व्याख्या तो सम्भव नहीं तीन-चार आत्म सम्पदाओं पर कुछ विचार प्रस्तुत करता हूं।

अदीनता—अदीन बनो। अपने आप को दीन और हीन मत समझो। Remember, you are the most necessary man on the earth. (Gorkey) स्मरण रखो, तुम संसार में सबसे आवश्यक मनुष्य हो। अपनी आत्मा को गिराओ मत। दीनता और हीनता को अपने पास मत फटकने दो। वेद के शब्दों में घोषणा पूर्वक कहो—**अदीनाः स्याम शरदः शतम्**। (यजु० ३६।२४) हम सौ वर्ष तक अदीन होकर जीएं।

बहुत-से मनुष्य यह सोचते हैं कि मैं यह नहीं कर सकता, वह नहीं कर सकता। बहुत-से व्यक्ति यह सोचते हैं कि जो कार्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगेश्वर श्री कृष्ण कर गये वह मैं नहीं कर सकता। जिन लोगों ने उन्हें परमात्मा बना दिया, उन्होंने बहुत गलती की। प्रत्येक व्यक्ति राम, कृष्ण और दयानन्द बन सकता है। प्रत्येक व्यक्ति वह कार्य कर सकता जो पूर्वज कर गये हैं। यही नहीं, मनुष्य उनसे भी बढ़कर कार्य कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति विश्ववन्द्य बन सकता है अपने पौरूष और पराक्रम से देवता बन सकता है। एक व्यक्ति सारे संसार को अपनी ओर आकर्षित कर शक्ति का केन्द्र बन सकता है। भर्तृहरि ने ठीक ही लिखा है—

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव परिस्फुरिततेजसा॥ नीतिश० ९९॥

जैसे एक सूर्य सारे जगत् को प्रकाशमान् कर देता है, उसी प्रकार एक शूरवीर सारी पृथिवी को अपने वश में कर सकता है।

आत्मविश्वास—किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए सबसे पहली आवश्यकता है—आत्मविश्वास। जो व्यक्ति यह सोचता है—"मैं इस कार्य को कर लूँगा," वह निश्चितरूप से इस उस कार्य को कर सकेगा। इमरसन ने कहा है—

Self trust is the first secret of sueccess.

आत्मविश्वास सफलता का सर्वप्रथम कारण है।

टेनीसन (Tennyson) महोदय लिखते हैं—

Self reverence, self knowledge, self control, these three alone lead life to soverign power.

आत्म-विश्वास, आत्म-ज्ञान और आत्म-संयम—ये तीन ही जीवन को परम शक्तिशाली बना सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी विवेकानन्द जी का कहना है—

"आत्मविश्वास सरीखाता दूसरा मित्र नहीं। आत्म विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है।"

आत्मविश्वास से मनुष्य ऊँचा उठता है, उन्नति करता है, आगे बढ़ता है तथा आत्मदीनता से मनुष्य अपने आपको दीन-हीन, हेय और तुच्छ समझने लगता है, फलतः उसकी अवनति होती है।

दृढ़-संकल्प—मनुष्य विचारों का पुतला है, वह जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है। अपने संकल्पों को दृढ़ बनाओ। दृढ़ संकल्प से आप संसार के कठिन-से कठिन कार्य को सरलतापूर्वक कर सकेंगे। मनुष्य की जैसी भावना होती है, जैसे संकल्प होते हैं, वह वैसा ही बन जाता है। पञ्चतन्त्र में कहा है—

यादृशी भावना यस्य सिद्धि भर्वति तादृशी ॥

मनुष्य की जैसी भावना होती है उसको सफलता और सिद्धि भी वैसी ही प्राप्त होती है। अपनी भावनाओं को महान् बनाओ। ऐसी प्रार्थना मत किया करो—

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥

मैं मूर्ख हूं, खल-दुष्ट और कामी हूं, प्रभो ! मुझ पर कृपा करो।

जो व्यक्ति, जो देश, जो जाति अपने आपको, दीन-हीन, मूर्ख, खल और कामी कहती है और समझती है। वह क्या उन्नति करेगी। अतः ऐसी प्रार्थनाओं को छोड़कर यूँ प्रार्थना किया करो—

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन ॥ ऋग्वेद

अरे मेरी शक्ति का क्या पूछना ! मैं इन्द्र हूं। मैं अपनी धन्यता को कभी हार नहीं सकता। मैं तो मृत्यु के सामने भी कभी झुक नहीं सकता।

वेद के शब्दों में गर्जनापूर्वक कहो—

आकूतिं देवीं पुरोरधे। अथर्ववेद

मैं संकल्प की देवी को सम्मुख रखता हूं। संकल्प को आगे रखकर कार्य-क्षेत्र में बढ़ो, सफलता मिलेगी और अवश्य मिलेगी।

नम्रता—आत्म-सम्पदा में नम्रता का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि मनुष्य के जीवन में नम्रता नहीं है तो वह कोई उन्नति नहीं कर सकता। अभिमान मनुष्य के सारे गुणों पर पानी फेर देता है। संसार में नम्र व्यक्ति का ही मान और सम्मान होता है। विनम्र व्यक्ति ही सम्पदाओं का संग्रह कर सकता है। यदि सम्पदाओं का संग्रह करना चाहते हो तो नम्र बनो। सुनीति ने अपने पुत्र ध्रुव को उपदेश देते हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानो विश्व के सभी मनुष्यों का कहा था—

सुशीलो भव धर्मात्मा मैत्रः प्राणिहिते रतः ।
निम्नं यथापः प्रवणः पात्रमायान्ति सम्पदः ।। विष्णु पु०

सुशील और धर्मात्मा बन। सबका मित्र और प्राणिमात्र का हितैषी बन क्योंकि जिस प्रकार फल स्वभावतः नीचे की ओर गति करता है। वैसे ही लोक-सम्पित्तयाँ सत्पात्र मनुष्य के पास स्वयं आ जाती हैं।

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम्

आत्मिक सम्पदाएँ कैसे प्राप्त होंगी ? वेद उपाय बताता है कि विश्वब्रह्माण्ड के सञ्चालक परमात्मा को अपना मित्र बना लो तो तुम्हें आत्मिक सम्पदाएँ प्राप्त होंगी। हे मनुष्य ! यदि तू सुख-शान्ति, आनन्द और कल्याण चाहता है तो आनन्द और ऐश्वर्य के भण्डार परमात्मा से मित्रता कर। जो मनुष्य परमात्मा को मित्र बना लेता है उसे अखिल ऐश्वर्य तथा आत्मिक ऐश्वर्य, पुष्टि और तुष्टि सभी कुछ प्राप्त हो जाता है क्योंकि आनन्द, ऐश्वर्य, धन-बल, सुख शान्ति और विभूति मनुष्य के पास नहीं ईश्वर के पास है। हमारे पास यदि है भी तो बहुत थोड़ी है और थोड़े में सुख नहीं। उपनिषदों में कहा—**यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति।** महत्ता में ही सुख है। परमात्मा के भण्डार में न्यूनता नहीं है, उसी से मांगो। वह नेतु= नेतृत्व करने वाला है। सच्चा नेता है वह—**सुनीतिभिर्नयसे त्रायसे जनम्।** (ऋग्वेद) अपने उपासकों को सुमार्ग से ले जाता है, बहकने और भटकने नहीं देता।

भगवान का मूल्य

एक बार एक जिज्ञासु ने एक संत से पूछा भगवान् का मूल्य क्या है ? संत ने उत्तर दिया, "तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं अवश्य दूंगा लेकिन इस हीरे का मूल्य बाजार में जाकर पूछ आओ। और हाँ देखो मूल्य छोटे से लेकर बड़े तक सभी से पूछना मगर बेचना इसे किसी के हाथ मत।

जिज्ञासु बाजार से भाव पूछ कर लौटा तो उसने कहा, "महाराज इस हीरे का मोल पाच सेर आलू से बढ़ते-बढ़ते अरबों खरबों तक जा पहुंचा और अन्त में एक जौहरी ने कहा, सारी दुनिया के हीरे एक ओर हों, तो भी इसका मूल्य चुकाया नहीं जा सकता।"

सन्त मुस्कराए और बोले, बस इसी प्रकार भगवान का मूल्य है जिसने उसे जहाँ तक समझा है वहीं तक मोल लगा दिया है लेकिन सत्य तो यह है कि वह अनमोल है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य उपदेश

(मनु के श्लोक दयानन्द के भाषार्थ)

अभिवादयेद् वृद्धांश्च दद्याच्चैवासनं स्वकम् ।
कृताँजलिरुपासीत गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात् ॥१॥
आचराल्लभते ह्यायुराचारादप्सिताः प्रजाः ।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम् ॥२॥
नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव ।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति ॥३॥

अर्थ

सदा विद्यावृद्धों और वयोवृद्धों को नमस्ते अर्थात् उनका मान्य किया करे। जब वे अपने समीप आवें तब उठकर मान पूर्वक ले आसन पर बैठावें और हाथ जोड़ के आप समीप बैठे, पूछे हुए उत्तर देवे और जब जाने लगे तब थोड़ी दूर पीछे-पीछे जाकर नमस्ते कर विदा किया करे और वृद्ध लोग हर बार निकम्मे जहाँ तहाँ न जाया करें ॥१॥

धर्माचरण से ही दीर्घायु उत्तम प्रजा और अक्षय धन को मनुष्य प्राप्त होता है और धर्माचार बुरे अधर्मयुक्त लक्षणों का नाश कर देता है ॥२॥

मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता वैसे ही किये हुए अधर्म का फल भी शीघ्र नहीं होता किन्तु धीरे-धीरे अधर्म कर्ता के सुखों को रोकता हुआ सुख के मूलों को काट देता है पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है ॥३॥

कालिदास के चार श्लोक

संस्कृत साहित्य के आलोचकों की परम्परा में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है। कालिदास की कृतियों में 'शकुन्तला' सबसे उत्कृष्ट है। 'शकुन्तला' में भी चतुर्थ अङ्क श्रेष्ठ है। चतुर्थ अङ्क में सबसे उत्तम चार श्लोक हैं।

शकुन्तला नाटक की कथा यों है। कण्व ऋषि कुलपति हैं। कुलपति वैसे आचार्य को कहते हैं, जो दस हजार विद्यार्थियों को अपने पास रखकर पढ़ाता है। उनको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोजन आदि भी देता है। शकुन्तला उन्हीं कण्व की पालित पुत्री है। बड़ी सुन्दरी, बड़ी गुणवती। दुष्यन्त भारत का प्रतापी सम्राट है। एक दिन मृगया के लिये वन में घूमता हुआ वह कण्व के आश्रम में चला आता है। कण्व बाहर गये हैं। उनकी अनुपस्थिति में शकुन्तला दुष्यन्त का आतिथ्य करती है। दुष्यन्त और शकुन्तला में प्रेम हो जाता है। दोनों अपनी मर्जी से अपने आप विवाह कर लेते हैं। इस प्रकार के विवाह को गन्धर्व विवाह कहते हैं। दुष्यन्त राजधानी को लौट जाता है एक अंगूठी दे जाता है शकुन्तला को यादगारी के लिए।

कण्व जब लौटते हैं तो उन्हें मालूम होता है कि शकुन्तला ने दुष्यन्त से अपना वैवाहिक सम्बन्ध कर लिया है। कन्या अपने पास रखने की है नहीं। फिर भी चक्रवर्ती सम्राट से उसका सम्बन्ध हो गया बिना चिन्ता और परेशानी के। कण्व कहते हैं चलो जो हुआ ठीक ही है। शकुन्तला को पति के घर भेज देना है शीघ्र से शीघ्र। विदाई की तैयारी होती है। अपने दो शिष्यों और आश्रम की एक वयोवृद्धा आचार्या गौतमी को शकुन्तला के साथ कर देते हैं।

शकुन्तला को दुष्यन्त पहचानता नहीं, अतएव उसको राजमहल में रखता नहीं है। कण्व के शिष्य परन्तु शकुन्तला को साथ नहीं लाते हैं। लाचार शकुन्तला की माता जिसने उसको जन्म देकर छोड़ दिया अब उसके रहने का प्रबन्ध अन्यत्र कर देती है। वहाँ उसको एक पुत्र होता है। दुष्यन्त एक बार घूमते हुए ऐसे बालक को देखते हैं जो सिंह के बच्चे से खेल रहा है। दुष्यन्त बड़े चकित होते हैं। फिर उन्हें पता चलता है कि शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न यह उन्हीं का पुत्र है। शकुन्तला के प्रति दुर्व्यवहार के कारण क्षमा याचना कर शकुन्तला को ले जाते हैं। शकुन्तला का ही वह पुत्र भरत नाम से प्रसिद्ध हुआ। कुछ लोगों को कहना है कि उसी भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। पहले इसका नाम आर्यावर्त था।

शकुन्तला की कहानी अच्छी नहीं है। मूल घटना उपदेश प्रद और अनुकरणीय नहीं है। परन्तु कालिदास ने शकुन्तला नाटक काव्यकला की दृष्टि से कमाल कर दिया है। इतना सुन्दर नाटक संसार के साहित्य में शायद दूसरा नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि कालिदास की तुलना में शेक्सपीयर को रख सकते हैं।

शकुन्तला के चतुर्थ अंक के चार श्लोक उस समय के हैं जब कण्व के आश्रम से शकुन्तला पतिगृह को जा रही है। पिता के घर से कन्या की विदाई मानव जीवन की एक नितान्त मर्मस्पर्शी घटना है। जिसके शरीर से उसका शरीर बना, जिसकी अर्धाङ्गिनी ने अपने उदर में उसे दस महीने रखा, उस समय जब वह बोलना, चालना फिरना कुछ नहीं कर सकती थी, जहाँ उसने एक दो दिन नहीं पूरे पन्द्रह सोलह वर्ष बिताये। वह अब उसका कोई नहीं है। उसका घर दूसरा है उसका अपना आदमी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूसरा है। ऐसे अवसरों पर सर्वत्र परम करुण दृश्य उपस्थित हो जाता है। इससे जनक जैसे विदेह विचलित हुए। तुलसीदास जी ने कहा—

'सियहिं विलोकि धीरता भागी
रहे कहावत परम विरागी।'

कालिदास के कण्व की अवस्था देखिये। विस्तार से शकुन्तला का पतिगृह गमन वर्णित है। हम यहाँ केवल चार श्लोक देंगे।

शकुन्तला आज चली जायगी ऐसा सोचकर कण्व की कैसी आतुरता है—

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्ट मुत्कंठया
कंठःस्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ता जड़ं दर्शनम्
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमहो स्नेहादरण्यौकसः
पीडन्ते गृहिणः कथंनुतनयाविश्लेषदुःखैर्नवै ॥

अर्थ—आज शकुन्तला चली जायगी इससे हमारा हृदय बेचैन हो रहा है; नेत्रों से अनवरत अश्रुप्रवाह जारी है; कंठ रुद्ध हो गया है बोली नहीं निकलती है; जड़ता से अभिभूत हो रहा हूं। मैं वनवासी हूं, मेरी जब ऐसी विकल अवस्था हो रही है तो मालूम नहीं गृहस्थियों की ऐसे समय में क्या दशा होती होगी।

कण्व विकल होकर लता और वृक्षों से बोलते हैं—

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
ना दत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्
आद्ये वः कुसुम प्रसूति समये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पति गृहं सर्वे रनुज्ञायताम् ॥

अर्थ—हे लताओ और वृक्षों! तुमको जल न पिलाकर (जलसेचन न कर) जो कभी स्वयं जल नहीं पीती थी; जिसको शृंगार करना अच्छा लगता था फिर भी तुम्हारे स्नेह से तुम्हारा एक पत्ता भी नहीं तोड़ती; जब तुममें पहले पहल फूल निकलता था तो जो उत्सव मनाती थी वही शकुन्तला आज पति के घर जा रही है। तुम सब अनुमति दो।

शिष्य शार्ङ्गरवको दुष्यन्त के लिए निम्नलिखित संदेश भगवान काश्यप (कण्व) देते हैं—

अस्मान् साधुविचिन्त्य संयमधना नुच्चैः कुलं चात्मनः
त्वय्यवयाः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रति पत्तिपूर्वक मियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न किं किंचिद् वाच्यं वधूबन्धुभिः ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थ—दुष्यन्त से कहना हम लोग वनवासी हैं, तपस्या ही हमारा धन है। आप बहुत बड़े कुल में पैदा हुए हैं। शकुन्तला ने बिना बन्धु वर्ग से पूछे आपसे अनुराग कर लिया। इन सारी बातों को खूब विचार कर और स्त्रियों की तरह शकुन्तला पर भी स्नेह दृष्टि रखियेगा। हम लोग इतनी ही प्रार्थना कर सकते हैं। इससे अधिक कुछ भाग्य में होगा तो वह होगा। वह हमारे बोलने का नहीं है।

शुश्रूषस्व गुरून् कुरुप्रिय सखी वृत्तिसपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भोगेष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा कुलस्याधयः॥

अर्थ—पतिगृह में जाकर सास ससुर आदि गुरुजनों की सेवा करना। सपत्नियों के साथ प्रिय सखी के जैसा व्यवहार करना। दास-दासिओं के प्रति उदारता प्रदर्शन में कमी न करना। सौभाग्य प्राप्तकर कदापि गर्व न करना! स्वामी के कठोर व्यवहार पर भी क्रोधवश उसके विरुद्ध न जाना। ऐसी स्त्रियां गृहस्वामिनी बनती है। इसके विरुद्ध आचरण करनेवाली स्त्रियां तो कुल को पीड़ित करनेवाली ही होती हैं।

●

ईमानदारी का फल

करीब १५० साल पहले की घटना है। अंग्रेजों के पैर भारत में जम गये थे। मानव राय नाम का एक बंगाली गुमाश्ता कलकत्ता की एक अंग्रेज कम्पनी में काम करता था। एक दिन वह कहीं से कम्पनी का २५ हजार रुपया वसूल करके ला रहा था। रास्ते में गंगा के किनारे भीड़ देखी। कौतूहलवश खड़ा हो गया। किसी चीज की नीलामी हो रही थी। बात यह थी कि इंग्लैंड से एक जहाज भारत आ रहा था। कप्तान की भूल से कलकत्ता से कुछ मील दूर वह जहाज डूब गया। इस जहाज में बहुत कीमती सामान था।

मानवराय ने सब कुछ सुना। भीड़ में से कोई खरीदने का इच्छुक नहीं प्रतीत होता था। जहाज वाले बोली चढ़ा रहे थे। गुमाश्ते ने किसी के भड़काने पर हंसी-हंसी में—२० हजार रुपया की बोली लगा दी। उसने सोचा था, इतने बड़े जहाज की बोली इतनी कम कीमत में कौन देगा? पर यह क्या? बोली वहीं समाप्त हो गयी। गुमाश्ते ने भी पूरी रकम गिन कर दे दी। वह अनमना सा कम्पनी के दफ्तर की ओर चल पड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रास्ते में उसे चार अंग्रेज मिले। उनके शरीर से पसीना चू रहा था और बड़े घबड़ाये हुए से थे। वे नीलामी के स्थान तक गये। वहां से भीड़ को तितर-बितर होते देखकर समझ गये कि नीलामी खत्म हो चुकी है। पूछताछ करने पर पता चला कि एक बंगाली गुमाश्ते ने २० हजार रु० में जहाज ले लिया है और यह सिर नीचा किये सामने चला जा रहा है। चारों अंग्रेज उसी ओर दौड़ते हुए गये। एक बोला—तुमने २० हजार रु० में जहाज खरीदा है, हम तुम्हें ५० हजार रु० तक देने को तैयार हैं। गुमाश्ते ने इन्कार कर दिया पर वह यह समझ गया कि उसने घाटे का सौदा नहीं किया है। अंग्रेज बढ़ते गये और दो लाख रु० तक पहुंच गये। मानवराय ने कहा—अच्छा, लाओ दो लाख रु०।" वह उनके साथ जाकर दो लाख रु० ले आया।

अब वह गुमाश्ता अपनी कम्पनी के दफ्तर में पहुंचा। वह अभी तक चिन्तित था। वह सोच रहा था कि कम्पनी के रुपये से सौदा करने का मेरा क्या अधिकार था? वह बड़े संकोच के साथ कम्पनी के मालिक के पास पहुंचा। नमस्कार आदि के बाद दो लाख रुपया की थैली मेज़ पर रख दी। मालिक ने चकित होकर पूछा—यह क्या है?"

मानवराय ने सारा हाल कह दिया। उसने इस बात के लिये खेद प्रकट किया कि मैंने आपसे बिना पूछे कम्पनी के रुपये से यह सौदा कर लिया पर यह काम कम्पनी के फायदे के लिए ही है।"

मालिक १५ रु० मासिक पाने वाले इस गुमाश्ते की ईमानदारी पर चकित हो गया। अगर वह २० हजार रुपया कम्पनी को देकर बाकी अपनी जेब में डाल लेता तो कम्पनी क्या कर सकती थी?

मालिक भी बड़ा बुद्धिमान और गुणग्राही था। उसने मानवराय की पीठ ठोंकी और कहा—मैंने तुम्हारे जैसा ईमानदार आदमी आज तक नहीं देखा। यह तुम्हारी ईमानदारी का पुरस्कार है"—यह कहकर १ लाख ८० हजार रु० उसे दे दिये। मालिक ने कहा—"कम्पनी को इस बात का अभिमान है कि उसके पास तुम्हारे जैसे सच्चे और ईमानदार नौकर हैं।"

—विनोद कुमार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

उपचार

राजीव

सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य महान शूरवीर था। वह वीरों का बड़ा सम्मान करता था। भद्रसेन नामक उसके एक सामंत ने अनेक युद्धों में असीम साहस और पराक्रम का परिचय दिया था। चंद्रगुप्त उसका बहुत आदर करता था। एक बार चन्द्रगुप्त यूनानी सेनापति सेल्यूकस से लड़ते हुए बुरी तरह से शत्रुओं से घिर गया। भद्रसेन ने अपनी जान पर खेलकर उसकी रक्षा की और चंद्रगुप्त का विशेष कृपापात्र बन गया।

वीर और स्वामिभक्त होते हुए भी भद्रसेन में एक बहुत बड़ा अवगुण था। सम्राट से बहुत कुछ पाने के बाद भी उसे संतोष नहीं था। जब कोई कहता कि तू बड़ा भाग्यशाली है तब भद्रसेन तुरन्त कोई न कोई मीन-मेख निकालने लगता। चाणक्य महामन्त्री ने कई बार संकेत से भद्रसेन का ध्यान उसके अवगुण की ओर आकृष्ट कराया, लेकिन भद्रसेन का रवैया जरा भी नहीं बदला।

एक दिन संध्या के समय महाराज चंद्रगुप्त, चाणक्य, भद्रसेन और कुछ खास दरबारी गंगा में नौका विहार कर रहे थे। ठंडी हवा बह रही थी, घर लौटते हुए पक्षी मधुर कलरव कर रहे थे और धीरे-धीरे चन्द्रमा उदय हो रहा था। ऐसा सुन्दर वातावरण देखकर महाराज बोले—"महामंत्री पेड़ों के पीछे से झाँकता हुआ चन्द्रमा कितना सुन्दर लग रहा है।"

"निस्संदेह महाराज", चाणक्य ने उत्तर दिया—"घर लौटते हुए पक्षियों का कलरव सारे वातावरण में संगीत बिखेर रहा है। कितनी अनोखी है भगवान् की लीला।"

"मुझे तो कोई विशेषता नहीं दीख रही है," स्वाभावानुसार भद्रसेन ने टिप्पणी की।

महाराज को बहुत बुरा लगा किन्तु उन्होंने कुछ नहीं कहा। अन्य दरबारियों को भी भद्रसेन की यह बात बड़ी अखरी, मगर वे चुप रहे। चाणक्य ने चतुराई से बात बदली—"महाराज, कारीगरों ने यह नौका खूब बड़ी बनवाई है। देखिए न, पूरा दरबार लगा हुआ है, फिर भी हर आदमी आराम से बैठा है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"मंत्री जी, इतनी चापलूसी न किया करो," भद्रसेन ने घृणा से मुँह विचका कर कहा—"बदन से बदन छिला जा रहा है और तुम्हें हर आदमी आराम से बैठा दीख रहा है। इससे ज्यादा आराम तो तब होता जब नाव न होती।"

दरबारियों को फिर बुरा लगा, किन्तु भद्रसेन महाराज का विशेष कृपा-पात्र था, इसलिए किसी को साहस न हुआ कि उसे टोके।

कुछ देर बाद जब सब लोग आनन्द से आपस में बातचीत कर रहे तब एका-एक भद्रसेन चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा उसके इस व्यवहार से महाराज अत्यंत क्षुब्ध हुए। उन्होंने भद्रसेन से रोने का कारण पूछा। ज्यों ज्यों महाराज ने पूछने पर अधिक जोर दिया त्यों-त्यों भद्रसेन और भी अधिक विलाप करने लगा। हार कर महाराज ने चाणक्य को संकेत किया।

चाणक्य बोला—"महाराज, भद्रसेन को नदी में फेंकवा दीजिए। वह स्वयं चुप हो जाएंगे।"

प्रस्ताव सुनकर चन्द्रगुप्त को अचरज हुआ किन्तु उसने सेवकों को आज्ञा दे कर भद्रसेन को नदी में फेंकवा दिया। जल में गिरते ही भद्रसेन घबरा कर चिल्लाने और तैरना न जानने के कारण डूबने लगा। जब वह डूबने को हुआ तब चाणक्य की आज्ञा से सेवकों ने उसे फिर नाव पर चढ़ा दिया। भद्रसेन रोना-धोना भूल कर शान्तिपूर्वक नाव में बैठ गया। वह पहले से अधिक प्रसन्न दीख रहा था। यह देख महाराज को बड़ा अचरज हुआ।

"महामंत्री," चंद्रगुप्त ने कहा—"मेरे इतना पूछने पर भी इसने न तो रोने का कारण बताया और न चुप ही हुआ आपने निर्दयतापूर्वक इसे पानी में फेंकवा दिया तो वह चुप भी हो गया और पहले से अधिक प्रसन्न भी दीख रहा है। इसमें क्या रहस्य है, यह जानने के लिए मैं आकुल हूँ।"

"मैंने निर्दयता नहीं की। रोग का उपचार किया है महाराज।" चाणक्य ने मुसकरा कर कहा—"भद्रसेन स्वभाव से ही असंतोषी हैं। नौका में स्थानाभाव होने के कारण इन्हें असंतोष था। इसी संताप से यह जले जा रहे थे और रोने लगे थे। पानी में फेंक दिए जाने के बाद इन्हें ज्ञात हुआ कि नौका इनके जीवन के लिए कितनी उपयोगी थी। नौका पर फिर चढ़ा लिए जाने के बाद इन्हें जान बचने की खुशी हुई और मन में संतोष उपजा। इसी कारण से यह चुप हो गए और पहले से अधिक प्रसन्न दीख रहे हैं।"

महाराज और दरबारी लोग चाणक्य की चतुराई से बड़े प्रभावित हुए। भद्रसेन बहुत लज्जित हुआ। उसने प्रण किया कि अब कभी अकृतज्ञता और असंतोष का भाव अपने मन में नहीं लाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने घर में

घरेलू शताब्दी पुस्तकालय बनाइए
वर्ष में ४१-०० रु० की बचत कीजिए

१. हर दो महीने में एक बार २०-०० की पुस्तकें १८-०० में वी. पी. पी. से प्राप्त करें। वर्ष में १२-०० की बचत।

२. हर बार का डाकखर्च जो लगभग ४-०० होगा, वह हम वहन करेंगे। वर्ष में २४-०० की यह भी बचत।

३. वेदप्रकाश मासिक हर माह बिना मूल्य प्राप्त होगा। ५-०० की बचत।

४. इस प्रकार वर्ष में १२० रु० की पुस्तकें संग्रहीत हो जायेंगी तथा ४१-०० रु० की बचत हो जायेगी।

सदस्य बनने के लिए आप हमें केवल तीन रुपये (अमानत राशि) भेज दें। तथा पुस्तकों के नाम लिख दें कि कौन-कौन सी पुस्तकें पहली वी. पी. भेजी जाय।

अब तक हम निम्नलिखित पुस्तकें घरेलू शताब्दी पुस्तकालय के सदस्यों को दे चुके हैं।

पं० वीरसेन वेदश्रमी

वैदिक सम्पदा २०-००

श्री रणवीर

महात्मा आनन्द स्वामी जीवनी ८-००

पं० रामशरण वशिष्ठ

वेदार्थ विज्ञान १-००

प्रो० विष्णुदयाल एम. ए.

वेद भगवान बोले ४-००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

चतुर्वेदशतकम् ८-००

शिव संकल्प ४-००

विवाह पद्धति २-००

पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार

सामवेदभाष्य (दोनों भाग) ३८-००

पं० सत्यकाम विद्यालंकार

वैदिक वन्दना ७-००

वैद्य गुरुदत्त

विश्वेदेवा ६-००

अद्वैत मीमांसा ६-००

प्रो० राजाराम शास्त्री

कठ उपनिषद् ८-००

प्रो० रामनिवास विद्यालंकार

ऋचाओं की छाया में ६-००

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार २०-००

प्रो० प्रशान्त वेदालंकार

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राज्य व्यवस्था ८-००

पं० नरेन्द्र (स्वामी सोमानन्द सरस्वती)

हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष ४-००

जो सज्जन इस पुस्तकालय योजना का लाभ उठाना चाहें वे ३-०० भेजकर सदस्य बन सकते हैं। उपरलिखित कोई पुस्तकें २०-०० की १८-०० भेजी जायेंगी।

गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा आनन्द स्वामी कृत पुस्तकें

तत्त्वज्ञान	७.००	मानव और मानवता	७.००
प्रभु दर्शन	५.००	प्रभु मिलन की राह	६.००
प्रभुभक्ति	३.००	घोर घने जंगल में	६.००
महामन्त्र	३.००	आनन्द गायत्री-कथा	२.००
सुखी गृहस्थ	२.००	मानव जीवन-गाथा	२.५०
बोध कथाएं	४.००	शंकर और दयानन्द	२.००
उपनिषदों का संदेश	४.००	The only way	३.००
भक्त और भगवान्	३.००	Anand Gayarti Discoarses	३.००
सत्यनारायण व्रत कथा	२.००	महामन्त्र उर्दू	३.५०
दो रास्ते	५.००	श्री रणवीर लिखित	
यह धन किस का है ?	५.००	श्रीमहात्मा आनन्दस्वामी सरस्वती	८.००
एक ही रास्ता	२.५०	" " " उर्दू	१०.००
दुनिया में रहना किस तरह	३.५०		

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली ११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली के प्रकाशन

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

भूतपूर्व संसद सदस्य तथा उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय द्वारा रचित एक अनूठी कृति।

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार

मूल्य २०-०० मात्र

निम्न विषयों को लेखक ने सरल भाषा में समझाया है।

१. मन (भौतिकवादी दृष्टिकोण)
२. मन (आध्यात्मिक दृष्टिकोण)
३. चेतना, मन तथा आत्मा
४. चेतना
५. ईश्वर
६. सृष्टियुत्पति
७. कर्म
८. निष्काम कर्म
९. शिक्षा
१०. जीवन
११. पुनर्जन्म
१२. मृत्यु

स्वामी जगदीश्वरानन्द कृत

शिव संकल्प	४.००
ब्रह्मचर्य गौरव	३.००
वेद सौरभ	४.००
वेद सौरभ [संक्षिप्त]	१.००
घरेलू औषधियाँ	२.५०
वैदिक विवाह पद्धति	२.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	३.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	६.००
वैदिक उदात्त भावनाएं	३.००
ऋग्वेदशतक	२.००
यजुर्वेदशतक	२.००
सामवेदशतक	२.००
अथर्ववेदशतक	२.००
चतुर्वेदशतक	८.००
कुछ करो कुछ बनो	३.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	३.००
आदर्श परिवार	४.००

पं० वीरसेन वेदश्रमी

वैदिक सम्पदा अजिल्द	२०.००
,, सजिल्द	३०.००

पं० सत्यकाम विद्यालंकार

वैदिक वन्दन	७.००

वैद्य गुरुदत्त

विश्वेदेवा	६.००
अद्वैत मीमांसा	६.००

पं० रामचन्द्र देहलवी

देहलवी लेखावली	७.००

पण्डित बिहारीलाल शास्त्री

विचार वाटिका	३.००

प्रो० विष्णुदयाल

वेद भगवान् बोले	४.००

स्वामी सर्वदानन्द

आनन्द उपदेशमाला	१.५०

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ब्रह्मचर्य संदेश	७.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	२०.००

स्वामी सत्यानन्द

दयानन्दप्रकाश	१५.००

पं० भगवद्दत्त

भारतीय संस्कृति का इतिहास	७.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नए प्रकाशन

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार २०.००

म० आनन्द स्वामी सरस्वती

दुनिया में रहना किस तरह ३.५०

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

शिव संकल्प ४.००

विवाह पद्धति २.००

डॉ० प्रशान्त कुमार वेदालंकार

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राज्य व्यवस्था ८.००

स्वामी अनुभवानन्द सरस्वती

आर्य समाज का परिचय १.५०

संकलन

महर्षि के सपनों का आर्यसमाज ५.००

महर्षि दयानन्द की देन ४.००

स्वामी दयानन्द

सत्यार्थप्रकाश २५.००

संस्कार विधि ४.००

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ८.००

स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश ०.१५

आर्याभिविनय १.००

शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण ०.३७

आर्योद्दिश्य रत्न माला ०.२५

बालशिक्षक ०.३७

व्यवहार भानु १.००

नित्यानन्द वेदालंकार

सन्ध्या विनय १.५०

पूर्व और पश्चिम ७.५०

जीवन की राहें ४.००

सु-राज्य की रूपरेखा ०.५०

नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि ०.६०

आर्यसमाज क्या है ? १.००

पं० नरेन्द्र

हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष ४.००

स्वामी ब्रह्ममुनि

वृहदारण्यक कथामाला ३.००

पं० राजेन्द्र

भारत में मूर्तिपूजा ४.००

स्वामी वेदानन्द

स्वाध्यायसंग्रह ४.००

पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

गोरक्षा परम कर्त्तव्य ०.५०

पं० उदयवीर शास्त्री

सांख्यदर्शन का इतिहास ४०.००

वेदान्तदर्शन का इतिहास ३०.००

सांख्यसिद्धान्त २४.००

सांख्य दर्शन १६.००

वेदान्तदर्शन ३०.००

वैशेषिक दर्शन २५.००

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि दयानन्द ४.००

श्री रामशरण वशिष्ठ

पशु हिंसा विषयक पाश्चात्य विद्वानों की समालोचना १-००

स्वामी मंगलानन्द पुरी

श्री मद्भगवतगीता १-५०

पं० राजनाथ पाण्डेय

वेद का राष्ट्रगान (पृथ्वी सूक्त) १-००

स्वामी दर्शनानन्द कृत

कथा पचीसी २-५०

बालोपयोगी

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द १.५०

स्वामी श्रद्धानन्द १.००

गुरु विरजानन्द १.००

पं० लेखराम १.००

पं० गुरुदत्त १.००

स्वामी दर्शनानन्द १.००

पं० सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०

वैदिक धर्मशिक्षा प्रथम भाग ०.६०

वैदिक धर्मशिक्षा द्वितीय भाग ०.६०

वैदिक धर्मशिक्षा तृतीय भाग १.००

वैदिक धर्मशिक्षा चतुर्थ भाग १.००

वैदिक धर्मशिक्षा पंचम भाग १.००

वैदिक धर्मशिक्षा षष्ठ भाग १.००

वैदिक धर्मशिक्षा सप्तम भाग १.२५

वैदिक धर्मशिक्षा अष्टम भाग १.२५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी योगेश्वरानन्द जी

आत्मविज्ञान	१८.००
वहिरंग योग	१८.००
निर्गुण ब्रह्म	१२.००
ब्रह्मविज्ञान	२०.००
हिमालय का योगी	१०.००
Science of Soul	१८.००
Science of Divinity	२५.००
First Step to Yoga	१८.००
Himalaya ka yogi	१५.००

वेदभाष्य

महर्षि दयानन्द कृत

महर्षि ने ऋग्वेद के दस मण्डल में से साढ़े छः मण्डलों का भाष्य ९ जिल्दों में किया है।

ऋग्वेद भाष्यम् प्रथम खण्ड	१८.००
,, ,, द्वितीय ,,	१५.००
,, ,, तृतीय ,,	१४.००
,, ,, चतुर्थ ,,	१२.००
,, ,, पंचम ,,	१४.००
,, ,, षष्ठ ,,	१०.००
,, ,, सप्तम ,,	१७.००
,, ,, अष्टम ,,	१८.००
,, ,, नवम ,,	१२.००
,, ,, दसवां मण्डल भाग I	३०.००

इन सभी भागों में संस्कृत भाष्य एवं हिन्दी भाष्य दोनों हैं।

केवल हिन्दी भाषा भाष्य भी पृथक् उपलब्ध हैं।

ऋग्वेद भाषा भाष्य प्रथम	८.००
,, ,, ,, द्वितीय	७.२०
,, ,, ,, तृतीय	७.२०
,, ,, ,, चतुर्थ	६.००
,, ,, ,, पंचम	७.००
,, ,, ,, षष्ठ	७.५०
,, ,, ,, सप्तम	८.००
,, ,, ,, अष्टम	८.००
,, ,, ,, नवम	६.००
दसवां मण्डल I भाग	१५.००

यजुर्वेद भाष्यम् प्रथम	१६.००
,, ,, द्वितीय	२५.००
,, ,, तृतीय	१६.००
,, ,, चतुर्थ	१४.००
यजुर्वेद भाषा भाष्य २ खंडों में	
महर्षि दयानन्द I	१५.००
भाग II	२५.००

पं० जयदेव विद्यालंकार कृत चारों वेद भाष्य

ऋग्वेद ७ खण्डों में	९२.००
अथर्ववेद ४ ,, (प्रेस में)	४८.००
यजुर्वेद २ ,,	२४.००
सामवेद १ ,,	२०.००

दर्शन ग्रन्थ

पण्डित तुलसीराम स्वामी

योग	२.००
वैशेषिक	२.००
न्याय	२.५०
वेदान्त	३.५०
सांख्य	३.००

आचार्य श्रीराम कृत

योग	५.७५
वैशेषिक	५.७५
सांख्य	५.७५
न्याय	५.७५
वेदान्त	५.७५
मीमांसा	७.००

प्रकाशक, मुद्रक, विजयकुमार ने सम्पादित कर एस० नारायण एण्ड संस पहाड़ी धीरज दिल्ली में मुद्रित कर वेदप्रकाश कार्यालय, ४८/५ दर्यागंज, दिल्ली से प्रकाशित किया

Dr. Vivek Arya, Vedic Library, Delhi